भगवान् ने कहा था

भगवान् के मंदिर में सुबह से जबरदस्त गहमागहमी थी। कारण, प्रदेश के नवनियुक्त सांस्कृतिक सचिव महोदय आज भगवान् के दर्शनार्थ पधारने वाले थे या कह लें, 'विजिट' करनेवाले थे।

सो सरगर्मी आज से नहीं, हफ्तों पहले से थी। मंदिर के चारों तरफ भक्तों और श्रद्धालुओं की पूजा-अर्चना के फलस्वरूप इकट्ठा हुआ कीचड़-काँदो और सड़े फूल-मालाओं का कचरा पूरी मुस्तैदी से हटाया जा रहा था। अगल-बगल का सारा एरिया धूल-धक्कड़ और मक्खी-मच्छरविहीन किया जा रहा था। गड्ढे-गड्ढियों में गैर-मिलावटी डी.डी.टी. छिड़का जा रहा था। मंदिर प्रांगण से बाहर भी दूर तक दोनों तरफ सिंदूर-टिकुली, कंघी-शीशा और शक्कर-फुटाने का प्रसाद बेचनेवालों को खदेड़-खदेड़कर भगाया जा रहा था।

बाहरी स्वच्छता अभियान के साथ-साथ मंदिर के अंदर भी चारों तरफ के ताखों पर बैठे देवी-देवताओं को भी सिंदूर-तेल आदि चुपड़कर चमकाया जा रहा था। प्रांगण तो झाड़ू-पानी और फिनाइल से धो-धोकर ऐसा स्वच्छ कर दिया गया था कि स्वयं भगवान् को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह उनके मंदिर का प्रांगण है।

दरअसल, यह खबर अब आम हो चुकी थी कि नवनियुक्त सांस्कृतिक

Bhagwan Ne Kaha Tha.pmd 6-7 5/14/2010, 11:23 AM

सचिव महोदय अत्यंत धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं। पर्व-त्योहार तथा कथा-प्रवचन आदि में बड़ी रुचि है उनकी। अलावा इसके हर अमावस्या तथा पूर्णमासी, प्रदोषादि दिवसों पर बिना नागा प्रात:काल सत्यनारायण कथा के माध्यम से साधू बनिया, उसकी पत्नी लीलावती तथा कलावती कन्या से इनकी भेंटवार्त्ता लगभग तय रहती है।

यही कारण है कि इस शहर के दौरे का कार्यक्रम निश्चित करने के साथ ही सचिव महोदय ने राष्ट्रीय स्तर और सांस्कृतिक महत्त्व के इस मंदिरवाले भगवान् का अभिषेक करने की मनशा जाहिर की थी।

बस, इसी का नतीजा था कि पलक झपकते भगवान् का मंदिर लगभग एक विवाह योग्य हिंदुस्तानी लड़की के पारंपरिक घर में तब्दील हो चुका था।

सचिव महोदय संध्याकाल की आरती में सम्मिलित होना चाहते थे। आरती का समय ठीक सात बजे था। सालों से यह सिलसिला चला आ रहा था; लेकिन सालों से किसी सचिव, कमिश्नर ने इस मंदिर को 'विजिट' करने की इच्छा भी तो जाहिर नहीं की थी। इन सचिव महोदय ने की थी, अत: भगवान् और पुजारियों का यह फर्ज बनता था कि उनकी इस इच्छा को अंजाम दें।

इसलिए प्रतीक्षा आरंभ हुई। सचिव महोदय के आगमन में विलंब होने के साथ-साथ आरती की वेला भी टलने लगी। छोटे पुजारी परेशान होकर उप-पुजारी की तरफ देख रहे थे। उप-पुजारी व्यग्र भाव से प्रमुख पुजारी की ओर और प्रमुख पुजारी भगवान् की ओर।...भगवान् खुद पसोपेश में थे। अत: 'तथास्तु' और 'एवमस्तु' के बीच का मिला-जुला कुछ ऐसा घालमेली सिग्नल दे रहे थे, जिसका कुछ भी अर्थ निकाला जा सकता था।

प्रमुख पुजारी अनुभवी थे। सही अर्थ लगाया कि भगवान् की मनशा

है कि सांस्कृतिक सचिव महोदय के आगमन तक आरती-अभिषेक रोका जा सके तो अच्छा। प्रमुख पुजारी के इस निष्कर्ष का सभी पुजारियों ने सहभाव से स्वागत किया। इंतजार और सही।...अब भगवान् कह रहे हैं तो कुछ सोच-समझकर ही कह रहे होंगे।

अंतत: मंदिर के मुख्य द्वार पर लाल-पीली बत्तियोंवाली गाड़ियों का काफिला हचाक्-हचाक् की ध्वनि के साथ आकर रुका। मातहतों तथा छोटे-बड़े अधिकारियों से घिरे सांस्कृतिक सचिव महोदय पधार गए थे। चुस्त-दुरुस्त कारवाँ झूमते-झामते मुस्तैदी से मंदिर की ओर चल पड़ा।

तैयारी सब पहले से थी ही। 'हर-हर महादेव' के जयघोष के साथ आरती/महाभिषेक इस तरह प्रारंभ हुआ जैसे सचिव महोदय के रूप में भगवान् अभी-अभी ही मंदिर में पधारे हैं। पूजा-अर्चना की प्रक्रिया भी कुछ इसी तरह चली। सर्वप्रथम प्रमुख पुजारी ने सचिव महोदय की अगवानी की, उन्हें तिलक लगाया, माल्यार्पण किया। अंगवस्त्रम् चढ़ाकर चाँदी के नटराज की वजनी मूर्ति भेंटस्वरूप दी। तत्पश्चात् सचिव महोदय से विधि-विधानपूर्वक पूजन-अर्चन करवाया गया।

उतनी देर तक छुटभैए, पुजारी, द्वारपाल और कर्मचारी मामूली भक्तों और दर्शनार्थियों को लगातार पीछे खदेड़ते रहे। कुछ हठी किस्म के भक्त-श्रद्धालु नहीं माने तो मंदिर के बाहर तैनात पुलिसकर्मियों ने एकाध डंडे जमाकर उन्हें पस्त कर दिया। इस प्रकार सभी कार्य बड़े सुचारु रूप से संपन्न हुए।

भगवान् भी बड़े प्रेम से मिले। सांस्कृतिक सचिव महोदय को ऐसी उम्मीद न थी। उन्होंने एक आस्थावान् भारतीय की तरह गद्गद भाव से हाथ जोड़कर कहा, ''बड़े दिनों से आपके दर्शनों की अभिलाषा थी, प्रभो! आज पूर्ण हुई।''

Bhagwan Ne Kaha Tha.pmd 8-9 5/14/2010, 11:23 AM

जवाब में भगवान् ने भी बड़े प्रेम से कहा, ''स्वयं मेरी भी बड़ी इच्छा थी आपके दर्शनों की।''

सांस्कृतिक सचिव महोदय अचकचाए, ''आपको मेरे दर्शनों की इच्छा!...क्या कहते हैं, भगवान्! कुछ समझ नहीं आया।''

भगवान् सकुचाते हुए बोले, ''ठीक कह रहा हूँ, सचिव महोदय। देखते नहीं हैं, आजकल पढ़े-लिखे, सभ्य-सुशिक्षित लोग मंदिर में आते कहाँ हैं! तरस जाता हूँ किसी सूटेड-बूटेड, सफारी-सुसज्जित ढंग के आदमी के साथ उठने-बैठने को।...जब भी देखो, बेपढ़े, उजड्ड-गँवार मनौतियों की पोटलियाँ और लोटे भर-भर प्रदूषित नदियों का पानी लिये धक्कम-धुक्की करते चले आते हैं।''

भगवान् शुद्ध बौद्धिक विमर्श के मूड में थे। आगे बोले, ''मंदिरों में आपसी प्रतिस्पर्धा भी इतनी बढ़ गई है कि जिन लोगों में थोड़ी-बहुत श्रद्धा-भक्ति बची भी है, वे उन्हीं मंदिरों में जाना पसंद करते हैं जिनकी पब्लिसिटी बढ़-चढ़कर करवाई जाती है। ज्यादा प्रचारित मंदिरों में चढ़ावा और नकदी भी, जाहिर है, ज्यादा पहुँचता है—और जहाँ नकदी चढ़ावा ज्यादा अर्पण किए जाएँगे, माहात्म्य-महिमा भी वहीं की गाई जाएगी न।''

इसके बाद भगवान् का स्वर उदास हो आया, ''मेरे इस मंदिर का सोने का कलश कब से टूटा हुआ है और मुझे अच्छी तरह मालूम है कि चढ़ावा इतना तो आता ही है कि कलश पर सोने का पत्तर चढ़वा दिया जाए। लेकिन पुजारी सब आपस में ही बाँट-बूँटकर खा जाते हैं। प्रबंध न्यासी भी इसमें काफी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। और फिर प्रेस विज्ञप्तियों के सहारे सरकार तक अपनी गुहार पहुँचाते हैं कि मंदिर निरंतर घाटे में जा रहा है, अनुदान की राशि बढ़ाई जानी चाहिए।''

यहाँ तक आते-आते भगवान् हताश ध्वनित हुए। अपनी स्थिति पर

क्षोभ व्यक्त करते हुए बोले, ''आप ही सोचिए, कलश का पत्तर उखड़ा होने से मंदिर की और मेरी भी इमेज बिगड़ती है या नहीं? साख भी गिरती ही है। भक्तों को क्या दोष दें, सोचेंगे ही कि जब इस मंदिर का भगवान् अपना ही टूटा छत्तर नहीं दुरुस्त करवा पा रहा है तो हमारे उधड़े छप्पर क्या छवाएगा! हमारी बिगड़ी क्या बनाएगा!...क्यों न किसी दूसरे, ज्यादा समर्थ भगवान् के पास चला जाए।

''पहले के पुजारी तो कभी-कभार मुझसे संपर्क स्थापित करने की कोशिश भी करते थे, लेकिन आजकलवालों को तो मेरी तरफ देखने तक की फुरसत नहीं।...जो जितना ज्यादा कमीशन देता है उसी को घंटे-घड़ियाल और केवड़ा-गुलाब आदि का कॉण्ट्रेक्ट दे देते हैं। पिछली बार तो मेरे अंगवस्त्रों की सारी जरी नकली निकल गई। सिल्क का रंग भी कच्चा। भक्तों के सामने कितनी लज्जा आई, कह नहीं सकता। लेकिन इन धूर्त पुजारियों को जरा भी लज्जा नहीं आई।'' कहते-कहते भगवान् का कंठ अवरुद्ध हो आया; लेकिन अपने आपको सँभाल ले गए।

सचिव महोदय भी बड़े पसोपेश में थे। पुन: भगवान् उवाच—''पुरानी कहावत है कि 'जिसके पत्तल में खाना उसी में छेद करना', लेकिन ये पुजारी तो इन दिनों इस तरह पेश आ रहे हैं जैसे ये नहीं बल्कि मैं इनके पत्तल में खाता हूँ। खैर छोड़िए। मैं तो बातों में भूल ही गया था। जलपान में क्या पसंद करेंगे आप?'' कहते हुए भगवान् ने पूजा की घंटी बजाई।

एक पुजारी मेवे-मिष्टान्न से भरी चाँदी की तश्तरी लिये अंदर आया। भगवान् के अनुरोध करने पर सचिव महोदय ने मस्तक झुकाकर थोड़ा सा प्रसाद ग्रहण किया। मेवे काफी पुराने और घुने हुए थे। मिठाई भी किसी ऐसी-वैसी दुकान की थी।

भगवान् समझ गए। इसलिए नहीं कि वे अंतर्यामी हैं बल्कि इसलिए

Bhagwan Ne Kaha Tha.pmd 10-11 5/14/2010, 11:23 AM

कि वे स्वयं रोज वही खाते थे। ग्लानिपूर्वक बोले, ''घुनी है न!···जाने दीजिए, मत खाइए। मेरी तो लाचारी है। सच पूछिए तो आपके लिए अचानक जलपान मँगाने का मेरा एक मकसद यह भी था कि आप स्वयं असलियत से वाकिफ हो जाइए, वरना भगवान् को झूठा समझेंगे।

''बताइए, ऐसी थर्ड-रेट चीजें प्रसाद में खिलाएँगे तो कौन सा भक्त इस मंदिर के पास फटकेगा? एक्सपोर्ट क्वालिटी के मेवे-मिष्टान्नों की बोरियाँ पुजारी सब सीधे अपने दरवाजे पर गिरवाते हैं।''

भगवान् ज्यादा भावुक हो रहे थे। समय भी ज्यादा हो रहा था। सचिव महोदय कई बार आँखें बचाकर अपनी कलाई घड़ी की तरफ देख चुके थे। बाहर बेसब्र और उजड्ड भक्तों की धक्का-मुक्की भी चालू थी। अत: सचिव महोदय हाथ जोड़कर उठ खड़े हुए।

''अब आज्ञा दीजिए। बाहर आपके भक्तगण भी बेचैन हो रहे हैं।''

''होने दीजिए।'' भगवान् खीझकर बोले, ''मैं भी आजिज आ गया हूँ। अब वे यहाँवाले भक्त भी कहाँ रहे, जो बहुत हुआ तो सुख-समृद्धि और ज्यादा-से-ज्यादा रोग-मुक्ति माँग लिया करते थे। सच्चे भक्तों को तो मात्र मुक्ति की ही कामना हुआ करती थी। हम आसानी से 'तथास्तु' कह दिया करते थे। लेकिन अब तो ये पुजारी बिचौलिए बन गए हैं। भक्तों में तरह-तरह की अफवाहें फैला दी हैं इन धूर्तों ने। अब जैसे यही कि भगवान् तो बस देने के नाम पर सिर्फ मोक्ष देते हैं। और उससे आज कुछ होनेवाला है क्या? जीना तो इस दुनिया में है भक्तों को। उन्हें समय और अवसर के हिसाब से चीजें मिलनी चाहिए न···। जैसे कि देना ही हो तो उनकी पुत्रियों को धारावाहिकों में रोल, मिस यूनिवर्स का ताज, स्वयं उन्हें अथवा उनके बेटे को 'कौन बनेगा करोड़पति' से कॉल और पत्नी को जिला बोर्ड की चेयरपर्सनशिप, या फिर चुनाव का टिकट ही···बहन के लिए बे-दहेज का वर

ही काफी होगा। बताइए, मेरे पास···''

अब तक भगवान् और सचिव महोदय दोनों अपने-अपने कारणों से रुआँसे हो आए थे। सचिव महोदय ने औपचारिक सहानुभूति से मुंडी हिलाई और जाने के लिए उठ खड़े हुए। जाते हुए रुके और भगवान् को नमस्कार कर पुन: औपचारिकता निभाई—''अच्छा तो भगवन्, चलता हूँ। शीघ्र ही फिर कभी सेवा में उपस्थित होने का अवसर निकालूँगा, अभी अनुमति दीजिए।''

भगवान् ने अनुमति दी। फिर ससंकोच कह गए, ''देखिएगा, इस बीच जरा मंदिर के कलश का उखड़ा हुआ पत्तर ठीक हो सके तो···''

□

Bhagwan Ne Kaha Tha.pmd 12-13 5/14/2010, 11:23 AM